समाणवेउव्वियादिछप्पुंजदव्वं । समत्तपुढविचरिमसमयणेरइयं घेत्तूण पुणो अप्पणो ऊणीकददव्वमेत्थतणछप्पुंजेसु पुध पुध वड्ढावेदव्वं ।

संपहि अण्णेण जीवेण वेउव्वियसरीरविस्सासुवचयपुंजे परमाणुत्तरे कदे सजोगिपढमसमयउक्कस्सदव्वस्सुवरि परमाणुत्तरं होदूण अण्णमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि । एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू वेउव्वियसरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि जाव वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचएण अब्भहियं काऊण ट्ठिदो । ताधे पुव्वुप्पण्णट्ठाणादो संपहियट्ठाणं परमाणुत्तरं होदि । कारणं सुगमं । अणेण विहाणेण वेउव्वियसरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जावप्पणो उक्कस्सदव्वपमाणं पत्ता त्ति ।

तदो अण्णो जीवो वेउव्वियसरीरं सगविस्सासोवचएण सह उक्कस्सं करिय पुणो तेजासरीरविस्ससुवचयपुंजं परमाणुत्तरं कादूणच्छिदो । ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवं परमाणुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू तेजासरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो पुव्वणिरुद्धतेजासरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्ससोवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससोवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो । ताधे तं ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं

---

सातवीं पृथ्वीके अन्तिम समयवर्ती नारकीको ग्रहण करके पुनः अपना अपना कम किया गया द्रव्य यहाँके छह पुञ्जोंमें पृथक्-पृथक् बढाना चाहिए ।

अब अन्य जीवके द्वारा वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करनेपर सयोगी जिनके प्रथम समयके उत्कृष्ट द्रव्यके ऊपर एक परमाणु अधिक होकर अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणु अधिकके क्रमसे वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु होने तक बढाने चाहिए । अनन्तर वैक्रियिकशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए अन्य जीवके उस समय पहले उत्पन्न हुए स्थानसे साम्प्रतिक स्थान एक परमाणु अधिक होता है । कारण सुगम है । इस प्रकार उक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट द्रव्यके प्रमाणको प्राप्त होने तक वैक्रियिकशरीरके दो पुञ्ज बढाने चाहिए ।

अनन्तर अपने विस्रसोपचयके साथ वैक्रियिकशरीरके द्रव्यको उत्कृष्ट करके पुनः तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुंजको एक परमाणु अधिक करके स्थित हुए एक अन्य जीवके उस समय अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक एक एक परमाणुकी उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाना चाहिए । अनन्तर पूर्वमें विवक्षित हुए तैजसशरीरको एक परमाणु अधिक करके तथा उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित हुए जीवके प्राप्त हुआ यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है । इस प्रकार तैजसशरीरके दो पुञ्जोंमें तब तक वृद्धि करते जाना

होदि । एवं ताव तेजासरीरदोपुंजा वड्ढावेदव्वा जाव उक्कस्सा जादा त्ति ।

संपहि अण्णो णेरइओ✪ वेउव्विय-तेजासरीराणि उक्कस्साणि काऊण पुणो कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजं पदेसुत्तरं काऊणच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगेगपदेसुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वेहि✿ जीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू कम्मइयसरीरविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढिदा त्ति । तदो अण्णो जीवो❋ पुव्वणिरुद्धकम्मइयसरीरं परमाणुत्तरं कादूण तस्सेव विस्सासुवचयपुंजं सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयेण अब्भहियं कादूणच्छिदो । ताधे एदं ट्ठाणमणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो परमाणुत्तरं होदि । पुणो अणेण विहाणेण कम्मइयसरीरदोपुंजा उक्कस्सा कायव्वा जाव गुणिदकम्मंसियणारगचरिमसमयसव्वुक्कस्सदव्वे त्ति । वेउव्वियसरीरविस्ससुवचएहिंतो आहारसरीरस्स विस्ससुवचओ असंखेज्जगुणो । तेण पमत्तसंजदम्मि आहार-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजे घेत्तूण पत्तेयसरीरवग्गणा एगजीवविसया किण्ण परूविदा ? ण, तेजा-कम्मइयसरीराणं चरिमसमयणेरइयं मोत्तूण अण्णत्थ उक्कस्सदव्वाभावादो । जत्थ तेजा-कम्मइयसरीराणि जहण्णाणि होंति तत्थ पत्तेयसरीवग्गणा सव्वजहण्णा होदि । जत्थ एदेसिमुक्कस्सदव्वाणि लब्भंति तत्थ पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि । ण च मणुस्सेसु पमत्तसंजदेसु पत्तेयसरीरवग्गणा उक्कस्सा होदि;

---

चाहिए जब तक ये उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त हो जाते ।

पुन: एक ऐसा नारकी लो जो वैक्रियिकशरीर और तैजसशरीरको उत्कृष्ट करके पुन: कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके स्थित है । तब अन्य अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है । इस प्रकार एक एक परमाणुकी तब तक वृद्धि करते जाना चाहिए जब तक कार्मणशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि नहीं हो जाती । अनन्तर एक ऐसा अन्य जीव लो जो पूर्व निरुद्ध कार्मणशरीरमें एक परमाणु अधिक करके पुन: उसीके विस्रसोपचय पुञ्जको सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंसे अधिक करके स्थित है । तब यह स्थान अनन्तर पिछले स्थानसे एक परमाणु अधिक होता है । पुन: इस विधिसे गुणित कर्मांशिक नारकी जीवके अन्तिम समयमें सर्वोत्कृष्ट द्रव्यके प्राप्त होने तक कार्मणशरीरके दोनों पुञ्जोंको उत्कृष्ट करना चाहिए ।

शंका-- वैक्रियिकशरीरके विस्रसोपचयसे आहारकशरीरका विस्रसोपचय असंख्यातगुणा है, इसलिए प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें आहारक, तैजस और कार्मणशरीरके छह पुञ्ज ग्रहण करके प्रत्येकशरीर वर्गणा एक जीव सम्बन्धी क्यों नहीं कही ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, अन्तिम समयवर्ती नारकीको छोडकर तैजस और कार्मणशरीरका अन्यत्र उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध नहीं होता । जहां पर तैजस और कार्मणशरीर जघन्य होते हैं वहां पर प्रत्येकशरीरवर्गणा सबसे जघन्य होती है और जहां पर इनके उत्कृष्ट द्रव्य उपलब्ध होते हैं वहाँ पर प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट होती है । परन्तु प्रमत्तसंयत मनुष्योंके

---

✪ ता० आ० प्रत्यो: 'अण्णोण्णे ठइओ' इति पाठ: । ✿ ता० अ० आ० प्रतिषु 'सव्वएहि' इति पाठ ❋ अ० आ० प्रत्यो: 'जीव' इति पाठ: ।

**गुणसेडिणिज्जराए अधट्ठिदिगलणाए♠ च गलिदतेजा-कम्मइयदव्वत्तादो। ण♣ च गलिदतेजा-कम्मइयदव्वेहिंतो आहारसरीरदव्ववग्गणाए बहुत्तमत्थि; तस्स तदणंतिमभागादो। संपहि एत्थ कम्मट्ठिदिकालसंचिदो अट्ठविहकम्मपदेसकलाओ कम्मइयसरीरं णाम। छावट्ठिसागरोवमसंचिदणोकम्मपदेसकलाओ तेजासरीरं णाम। तेत्तीससागरोवमसंचिद-णोकम्मपदेसकलाओ वेउव्वियसरीरं णाम। खुद्दाभवग्गहणप्पहुडि जाव तिण्णि-पलिदोवमसंचिदपदेसकलाओ ओरालियसरीरं णाम। अंतोमुहुत्तसंचिदपदेसकलाओ आहारसरीरं णाम। तेण णेरइयचरिमसमए चेव उक्कस्ससामित्तं दादव्वं।**

प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं होती; क्योंकि, उनके गुणश्रेणि निर्जराके द्वारा और अध:-स्थितिगलनाके द्वारा तैजस और कार्मणशरीरका द्रव्य गलित हो जाता है। यदि कहा जाय कि गलित हुए तैजस और कार्मणशरीरके द्रव्यसे आहारकशरीरकी द्रव्यवर्गणायें बहुत होती हैं सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, यह उनके अनन्तवें भागप्रमाण होता है। अत: प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें प्रत्येकशरीर वर्गणा उत्कृष्ट नहीं कही।

यहाँपर कर्मस्थिति कालके भीतर संचित हुए आठ प्रकारका कर्मप्रदेश समुदायकी कार्मणशरीर संज्ञा है। छयासठ सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी तैजसशरीर संज्ञा है। तेतीस सागर कालके भीतर संचित हुए नोकर्मप्रदेश समुदायकी वैक्रियिक-शरीर संज्ञा है। क्षुल्लकभवग्रहण कालसे लेकर तीन पल्य कालके भीतर संचित हुए नोकर्म-प्रदेश समुदायकी औदारिकशरीर संज्ञा है और अन्तर्मुहूर्त कालके भीतर संचित हुए नोकर्म-प्रदेश समुदायकी आहारकशरीर संज्ञा है, इसलिए नारकी जीवके अन्तिम समयमें ही उत्कृष्ट स्वामित्व देना चाहिए।

विशेषार्थ–– यहां पर प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणाका विचार करते हुए वह एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट किस जीवके होती है इस बातका विस्तारसे निरूपण किया गया है। जिन शरीरोंका स्वामी एक ही जीव होता है और उनके आश्रयसे अन्य जीव नहीं उपलब्ध होते उन शरीरोंके समुदायका नाम प्रत्येकशरीर द्रव्य वर्गणा है। आगममें ऐसे आठ प्रकारके जीव बतलाये हैं जिनके शरीरोंके आश्रयसे अन्य जीव नहीं रहते। वे आठ प्रकारके जीव ये हैं– केवली जिन, देव, नारकी, आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वायुकायिक। यहां सर्व प्रथम यह देखना है कि इन जीवोंमें जघन्य प्रत्येकशरीर द्रव्य-वर्गणाका स्वामी कौन जीव है और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका स्वामी कौन जीव है। जीव दो प्रकारके होते हैं– एक क्षपितकर्मांशिक और दूसरे गुणितकर्मांशिक। जो क्षपितकर्मांशिक जीव होते हैं उनके कर्म वर्गणायें उत्तरोत्तर ह्रस्व होती जाती हैं और अयोगीके अंतिम समयमें वे सबसे न्यून होती हैं, इसलिये अयोगी जिनके अन्तिम समयमें प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे जघन्य होती है। यहां इस वर्गणासे औदारिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है। गुणित कर्मांशिक जीव वे कहलाते हैं जिनके कर्मवर्गणायें उत्तरोत्तर महापरिणामवाली होती जाती हैं और तेतीस सागरकी आयुवाले नारकी जीवके अन्तिम समयमें वे सबसे उत्कृष्ट होती हैं, इसलिये नारकी जीवके अन्तिम समयमें

♠ ता० आ० प्रत्यो: 'अवट्ठिदिगलणाए' इति पाठ:।

♣ ता० प्रतौ 'च गलिदतेजाकम्मइयदव्वत्तादो। ण' इति पाठो नोपलभ्यते।

**संपहि एगजीवमस्सिदूण णेरइयचरिमसमए वड्ढी णत्थि; पत्तुक्कस्सभावादो। बादरपुढविकाइयपज्जत्तवेजीवे घेत्तूण लभिस्सामो। तं जहा– गुणिदघोलमाणलक्खणेणागदा✿ वेबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णेण संबद्धसरीरा णारगुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए पादेक्कं कदअद्धद्धसंचया चरिमसमयणेरइयस्स✡ वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीरेहि सह सरिसा। जदि वि वेउव्वियसरीरादो ओरालियसरीरमसंखेज्जगुणहीणं तो वि सरिसत्तं ण विरुज्झदे; तेजा-कम्मइयसरीरेसु वेउव्वियसरीरस्स**

---

प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा सबसे उत्कृष्ट होती हैं। यहां इस वर्गणासे वैक्रियिकशरीर, तैजसशरीर और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचय इन छह पुञ्जोंका ग्रहण होता है। मध्यमें इस वर्गणाके अनेक विकल्प हैं जिनका निर्देश मूलमें किया ही है। यहां जघन्य वर्गणा, एक परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा, दो परमाणु अधिक जघन्य वर्गणा इत्यादि क्रमसे वृद्धि करते हुए उत्कृष्ट वर्गणा लानेकी विधि जिस प्रकार मूलमें बतलाई गई है उस प्रकार उसे जान लेना चाहिए। पहले अन्तिम समयवर्ती अयोगी जिनके ही नाना जीवोंका आलम्बन लेकर जघन्य वर्गणामें परमाणुओंकी वृद्धि की गई है। इसके बाद उपान्त्य समयवर्ती अयोगी जिनका आश्रय करके वृद्धि कही गई है और इस प्रकार पीछे लौटकर प्रथम समयवर्ती सयोगी जिन तक आकर वृद्धिका क्रम दिखलाया गया है। इसके बाद देव और देवोंके बाद नारकी जीवोंको स्वीकार करके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा अपने उत्कृष्ट विकल्प तक उत्पन्न की गई है। प्रथम समयवर्ती सयोगी जिनके बाद आहारकशरीर, पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, और वायुकायिक, जीवोंका ग्रहण इसलिए नहीं किया, क्योंकि, एक जीवकी अपेक्षा इनके जो प्रत्येकशरीर द्रव्यववर्गणा होती है उसका ग्रहण मध्यम विकल्पोंमें आ जाता है। यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा लाते समय प्रत्येक स्थल पर गुणकार सब जीवोंसे अनन्तगुणा बतलाया गया है सो यह कथन सम्भव सत्यकी अपेक्षासे किया गया जानना चाहिए; क्योंकि प्रत्येक जीवके औदारिकशरीर आदि जघन्य वर्गणासे अपनी औदारिकशरीर आदि उत्कृष्ट वर्गणा व्यक्तरूपसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंके समुच्चयरूप नहीं होती। कारण कि औदारिकशरीर आदि अपनी जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणाका गुणकार अभव्योंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण ही बतलाया है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाके स्वामीका विचार किया।

अब एक जीवका अवलम्बन लेकर नारकीके अन्तिम समयमें वृद्धि नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो गया है अतः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त दो जीवोंका आलम्बन लेकर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाको प्राप्त करते हैं। यथा-यहां गुणितघोलमान विधिसे आये हुए ऐसे दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव लो जिनके शरीर परस्परमें सम्बद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकके प्रत्येकशरीर वर्गणाका संचय नारकीके उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणाके संचयसे आधा आधा है। अतएव इन दोनों जीवोंके प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका संचय अंतिम समयवर्ती नारकी जीवके वैक्रियिक, तैजस और कार्मणशरीरके संचयके समान होता है। यद्यपि वैक्रियिकशरीरसे औदारिकशरीर असंख्यातगुणा हीन होता है तो भी इन दोनों संचयोंके सदृश होनेमें कोई विरोध नहीं आता; क्योंकि तैजस और कार्मणशरीरोंके रहते हुए वैक्रियिकशरीरके असंख्यातवें भागमात्र औदारिकशरीरका

---

✿ अ० प्रतौ '–णागद' आ० प्रतौ '–णागदे, इति पाठः।

✡ अ० आ० प्रत्योः '–णरइय' इति पाठः।

असंखेज्जदिभागमेत्तदव्वुवलंभादो। संपहि दोसु जीवेसु ट्ठियओरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छप्पुंजा पुव्वविहाणेण वड्ढावेयव्वा जाव दोण्णं जीवाणं पाओग्गउक्कस्सदव्वं पत्ता त्ति। पुणो तिण्णिबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा अण्णोण्णसंबद्धसरीरा दोण्णं बादरपुढविपज्जत्त-जीवाणमुक्कस्सदव्वस्स कयतिभागसंचया एदेहि दोहि वि सरिसा होंति। पुणो ते मोत्तूण इमे घेत्तूण पुव्वविहाणेण वड्ढावेदव्वा जाव अप्पप्पणो उक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति। पुणो एदेसिं तिण्णं दव्वाणं केसिं दव्वं सरिसं त्ति वुत्ते वुच्चदे। तं जहा– चदुण्णं बादरपुढविकाइयजीवाणं तिण्णं बादरपुढविकाइयउक्कस्सदव्वस्स चदुब्भागसंचयाणं एगबंधणबद्धाणं दव्वं सरिसं होदि। एदेसिं पि दव्वं तेणेव कमेण वड्ढावेदव्वं जाव चदुण्णं जीवाणमुक्कस्सदव्वं पत्तं त्ति। एवं पंच-छ सत्तट्ठ-णव-दसप्पहुडि जाव तप्पाओग्गपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवा त्ति णेदव्वं। पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि कमेण वड्ढाविय पुणो एगबंधणबद्धबादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा दव्वसंचयेण एगबंधणबद्धपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तबादरपुढविकाइयपज्जत्तजीवेहि सरिसा घेत्तव्वा। पुणो एदे घेत्तूण पुव्वविहाणेण एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणि परिवाडीए वड्ढाविय पुणो

---

द्रव्य उपलब्ध होता है। अब इन दोनों जीवोंमें स्थित औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरके छह पुञ्जोंको पूर्वोक्त विधिसे तब तक बढाना चाहिए जब तक वे दो जीवोंके योग्य उत्कृष्टपनेको नहीं प्राप्त होते। पुनः बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त तीन ऐसे जीव लो जो परस्परमें शरीरसे संबद्ध हों और जिनमेंसे प्रत्येकका प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा संचय दो बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके उत्कृष्ट संचयके तीसरे भागप्रमाण हो। इसलिए इनका संचय उक्त दो जीवोंके संचयके समान होता है। पुनः उन पूर्वोक्त जीवोंको छोडकर और इनका अवलम्बन लेकर पूर्वोक्त विधिसे अपने उत्कृष्ट प्रमाणके प्राप्त होने तक द्रव्यकी वृद्धि करनी चाहिए। पुनः इन तीनोंका द्रव्य किनके द्रव्यके समान होता है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं। यथा– ऐसे चार बादर पृथिवीकायिक जीव लो जो एक बन्धनबद्ध हैं और जिनमेंसे प्रत्येकको तीन बादर पृथिवीकायिक जीवोंके उत्कृष्ट सचयके चौथे भागप्रमाण द्रव्यका संचय प्राप्त हुआ है, अतएव इन चारोंका संचय उक्त तीनोंके संचयके तुल्य है। इनके भी द्रव्यको उसी क्रमसे बढाना चाहिए जिससे इन चारों जीवोंका द्रव्य उत्कृष्टपनेको प्राप्त हो जाय। इस प्रकार पाँच, छह, सात, आठ, नौ और दससे लेकर तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके होने तक ले जाना चाहिए। पुनः इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंको क्रमसे बढाकर पुनः एक बन्धनबद्ध इतने बादर तेजकायिक पर्याप्त जीव लेने चाहिए जो द्रव्यसंचयकी अपेक्षा एक बन्धनबद्ध पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंके समान हों। पुनः इनका आश्रय करके पूर्वोक्त विधिसे इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंको आनुपूर्वीसे बढाकर पुनः एक जीवको अधिक करते हुए जब तक एक बन्धनबद्ध बादर

---

✲ ता०प्रतौ '–मेत्तदव्व–' आ०प्रतौ '–मित्ततद्दव्व–' इति पाठः।

काऊण णेदव्वं✿ जाव बादरतेउक्काइयपज्जत्तजीवा आवलियवग्गादो असंखेज्जगुण-मेत्ता कमेण वड्ढाविय एगबंधणबद्धा जादा त्ति । अथवा तप्पाओग्गअसंखेज्जजीवा एगबंधणबद्धा घेत्तव्वा । कुदो ? बादरतेउक्काइयपज्जत्तापज्जत्ताणं देवकद✲च्छुपा-दिसु एगागारे एगबंधणबद्धं पडि विरोहाभावादो । ते कत्थ लब्भंति? वल्लरिदाहे वा देवकदच्छुए वा महावणदाहे वा लब्भंति । पुणो एदेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीरेसु पत्तेयं वड्ढाविदेसु पत्तेयसरीरदव्ववग्गणा उक्कस्सा होदि । जहण्णादो उक्कस्सा असं-ज्जगुणा । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

पुढवि-आउ-तेउ-वाउकाइया देव-णेरइया आहारसरीरा पमत्तसंजदा सजोगि-अजो-गिकेवलिणो च पत्तेयसरीरा वुच्चंति; एदेसिं णिगोदजीवेहि सह संबंधाभावादो । विग्ग-हगदीए वट्टमाणा बादर-सुहुमणिगोदजीवा पत्तेयसरीरा ण होंति; णिगोदणाम-कम्मो-दयसहगदत्तेण विग्गहगदीए वि एगबंधणबद्धाणंतजीवसमूहत्तादो । जदि विग्गहगदीए वट्टमाणासेस❀जीवा पत्तेयसरीरा होंति तो पत्तेयवग्गणाओ अणंताओ होज्ज । ण च एवं, असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति अविरुद्धाइरियवयणेण अवगदत्तादो । विग्गहगदीए

---

तेजस्कायिक पर्याप्त जीव आवलिवर्गसे असंख्यातगुणे नहीं हो जाते तब तक इनकी संख्या और उसी क्रमसे द्रव्यको बढाते हुए ले जाना चाहिए । अथवा एक बन्धनबद्ध तत्प्रायोग्य असंख्यात जीव लेने चाहिए; क्योंकि, देवकृत झाडियोंमें लगी हुई अग्निमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके एक स्थानमें एक बन्धनबद्ध होनेमें कोई विरोध नहीं आता ।

शंका– एक बन्धनबद्ध वे जीव कहाँ उपलब्ध होते हैं ?

समाधान– लताओंका दाह होते समय, देवकृत झाडियोंमें या महावनका दाह होते समय एक बन्धनबद्ध उक्त जीव उपलब्ध होते हैं ।

पुनः इनके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके पृथक् पृथक् बढाने पर प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा उत्कृष्ट होती है ! यहां जघन्य वर्गणासे उत्कृष्ट वर्गणा असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, देव, नारकी, आहारकशरीरी, प्रमत्त-संयत, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये जीव प्रत्येकशरीरवाले होते हैं, क्योंकि, इनका निगोद जीवोंके साथ सम्बन्ध नहीं होता । विग्रहगतिमें विद्यमान बादर निगोद जीव और सूक्ष्म निगोद जीव प्रत्येकशरीरवाले नहीं होते हैं, क्योंकि, निगोद नामकर्मके उदयके साथ गमन होनेके कारण विग्रहगतिमें भी एक बन्धनबद्ध अनंत जीवोंका समूह पाया जाता है । यदि विग्रहगतिमें वर्तमान अशेष जीव प्रत्येकशरीर होते हैं ऐसा माना जाय तो प्रत्येक वर्गणायें अनन्त हो जावें । परन्तु ऐसा है नहीं; क्योंकि, वे असंख्यात लोक प्रमाण होती हैं ऐसा अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनोंसे

---

✿ ता० प्रतौ 'काऊण पुणो णेदव्वं' इति पाठः । ✲ ता० प्रतौ '-क्काइयपज्जत्ताणं व कद-' इति पाठः । ❀ ता० प्रतौ 'वट्टमाणा सेस-' इति पाठः ।

सरीरणामकम्मोदयाभावादो ण पत्तेयसरीरत्तं ण साहारणसरीरत्तं । तदो ते पत्तेयसरीरबादर-सुहुमणिगोदवग्गणासु ण कत्थ वि पदंति त्ति वुत्ते✡ वुच्चदे– ण एस दोसो; विग्गहगदीए बादर-सुहुमणिगोदणामकम्माणमुदयदंसणेण तत्थ वि बादर-सुहुमणिगोददव्ववग्गणाणमुवलंभादो । एदेहिंतो वदिरित्ता जीवा गहिदसरीरा अगहिदसरीरा वा पत्तेयसरीरवग्गणा होंति । तदो पत्तेयसरीरा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति त्ति सिद्धं । ते च एगबंधणबद्धा असंखेज्जलोगमेत्ता होंति । कुदो एदं णव्वदि त्ति वुत्ते ईसिप्पब्भाराए✲ पुढवीए बादरपुढविकाइयजीवा असंखेज्जलोगमेत्ता होदूण सव्वत्थोवा । एक्कम्हि उदगबिंदुम्हि आउकाइया जीवा असंखेज्जगुणा । एक्कम्हि इंगाले तेउक्काइया जीवा असंखेज्जगुणा। एक्कम्हि जलबुब्बुदे वाउक्काइया जीवा असंखेज्जगुणा त्ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे । तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि एगबंधणबद्धेहि उक्कस्सिया एया पत्तेयसरीरवग्गणा होदि त्ति ण घडदे ? ण एस दोसो, ईसिप्पब्भारसिलेग-जलबिंदु-इंगाल-जलबुब्बुदेसु पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तजीवेसु संतेसु वि तत्थ तेउक्काइयपज्जत्तमेत्ताणं चेव जीवाणमेगबंधणबद्धाणमुवलंभादो । एगबंधणबद्धा एत्तिया चेव

---

जाना जाता है ।

शंका-- विग्रहगतिमें शरीर नामकर्मका उदय नहीं होता, इसलिए वहां न तो प्रत्येकशरीरपना प्राप्त होता है और न साधारणशरीरपना ही प्राप्त होता है । इसलिये वे प्रत्येकशरीर, बादर और सूक्ष्म निगोद वर्गणाओंमेंसे किन्हींमें भी अन्तर्भूत नहीं होती हैं ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें बादर और सूक्ष्म निगोद नामकर्मोंका उदय दिखाई देता है इसलिए वहां पर भी बादर और सूक्ष्म निगोद द्रव्यवर्गणायें उपलब्ध होती हैं । और इनसे अतिरिक्त जिन्होंने शरीरोंको ग्रहण कर लिया है या नहीं ग्रहण किया है वे सब जीव प्रत्येकशरीर वर्गणावाले होते हैं ।

इसलिए प्रत्येकशरीर वर्गणायें असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं यह सिद्ध होता है ।

शंका-- एक बन्धनबद्ध वे जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं । यदि कहो कि यह बात किस प्रमाणसे जानी जाती है तो इसका समाधान यह है कि ईषत्प्राग्भार पृथिवीमें बादर पृथिवीकायिक जीव असंख्यात लोकप्रमाण होते हुए भी सबसे स्तोक होते हैं । इनसे एक जलबिन्दुमें जलकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इनसे एक अंगारेमें अग्निकायिक जीव असंख्यातगुणे होते हैं । इनसे एक जलके बुलबुलेमें वायुकायिक जीव असंख्यागुणे होते हैं । इस प्रकार इस अल्पबहुत्व सूत्रसे यह बात जानी जाती है । इसलिए पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण एक बन्धनबद्ध जीवोंके अवलम्बनसे एक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणा होती है यह बात घटित नहीं होती ?

समाधान-- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ईषत्प्राग्भार शिलामें, एक जलबिन्दुमें, एक अंगारेमें और जलके एक बुलबुलेमें अलग अलग असंख्यात लोकप्रमाण जीवोंके होने पर भी वहां मात्र तेजस्कायिक पर्याप्त जीव ही एक बन्धनबद्ध उपलब्ध होते हैं ।

---

✡ ता० प्रतौ '( त्ति- ) वुत्ते' इति पाठः । ✲ ता० प्रतौ 'इसिप्पभाराए' इति पाठः ।

होंति अहिया ण होंति त्ति कधं णव्वदे ? अविरुद्धाइरियवयणादो । ते च तेउक्का-इएसु चेव बहुआ लब्भंति ण अण्णत्थ । तेण वल्लरिदाहादिसु एंगिगालो चेव पहाणीकओ । तत्थ गुणिदकम्मंसिया सुट्टु जदि बहुआ होंति तो आवलियाए असं-खेज्जदिभागमेत्ता चेव, अवसेसा सव्वे अगुणिदकम्मंसिया । एसा सत्तारसमी (१) वग्गणा १७ अग्गेज्झा सभेयणत्तादो ।

**पत्तेयसरीरदव्ववग्गणाणमुवरि धुवसुण्णदव्ववग्गणा णाम । ९२ ।**

उक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते बिदियधुवसुण्णदव्ववग्गणाए सव्वजहण्णिया धुवसुण्णदव्ववग्गणा होदि । तदो रूवुत्तरकमेण परिवाडीए सव्व-जीवेहि अणंतगुणमेत्तधुवसुण्णदव्ववग्गणासु गदासु उक्कस्सिया धुवसुण्णदव्ववग्गणा

---

शंका– एक बन्धनबद्ध इतने ही जीव उपलब्ध होते हैं अधिक नहीं होते हैं यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान– अविरुद्ध आचार्योंके वचनोंसे जाना जाता है ।

और वे तैजसकायिकोंमें ही बहुत उपलब्ध होते हैं अन्यत्र नहीं उपलब्ध होते, इसलिए लता दाह आदिमें एक अंगारा ही प्रधान किया है । वहां गुणितकर्मांशिक जीव यदि बहुत होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं । बाकीके सब गुणितकर्मांशिक नहीं होते।

यह सत्रहवीं वर्गणा है ।

विशेषार्थ– पहले एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा कह आये हैं । यहां एक बन्धनबद्ध नाना जीवोंकी अपेक्षा यह वर्गणा बतलाई गई है । जिनका शरीर पृथक् पृथक् अर्थात् प्रत्येक होकर भी परस्पर जुडा हुआ होता है वे एक बन्धनबद्ध जीव माने गये हैं । ऐसे पृथिवीकायिक जीव पल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण हो सकते हैं और अग्निकायिक जीव इनसे भी अधिक हो सकते हैं जो एक पिण्डमें बद्धनबद्ध रहते हैं और इससे इन सबको मिलकर एक प्रत्येकवर्गणा बनती है । साधारण शरीरसे इस प्रत्येक शरीरमें बहुत अन्तर होता है । वहां शरीर एक ही होता है किन्तु यहां सबके अलग अलग शरीर होते हैं । मात्र प्रत्येक-शरीर एक दूसरेसे सम्बद्ध रहते हैं और इसीसे इन्हें एक बन्धनबद्ध मानकर इनकी एक वर्गणा मानी गई है । एक तेजस्कायिक जीवके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर तथा इनके विस्रसोपचयोंका जितना उत्कृष्ट संचय हो सकता हो उसे असंख्यातगुणित आवलिवर्गसे गुणित करनेपर या तत्प्रायोग्य असंख्यातसे गुणित करनेपर उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाका प्रमाण आता है । यहां अन्तिम समयवर्ती नारकीके उत्कृष्ट संचयसे आगे की प्रक्रिया द्वारा इसी वर्ग-णाके उत्पन्न करनेकी विधि कही गई है । यह नाना प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणारूप होकर भी एक बन्धनबद्ध होनेसे एक प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणा मानी गई है यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

**प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर ध्रुवशून्य वर्गणा है ।। ९२ ।।**

उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर वर्गणामें एक अंकके मिलाने पर दूसरी ध्रुवशून्य वर्गणा सम्बन्धी सबसे जघन्य ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है । अनन्तर एक एक अधिकके क्रमसे आनुपूर्वीसे सब जीवोंसे अनन्तगुणी ध्रुवशून्य वर्गणाओंके जाने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्यवर्गणा उत्पन्न होती है ।

---

(१) अ० आ० प्रत्योः 'सत्तरसमी' इति पाठः ।

उप्पज्जदि । सा च जहण्णादो अणंतगुणा । को गुणगारो ? सव्वजीवाणमसंखेज्जदिभागो । तं जहा- सव्वजीवरासिं असंखेज्जलोगमेत्तसरीरेहि ओवट्टिय आवलियाए असंखेज्जदिभागेण असंखेज्जलोगेहि एगजीवोरालिय-तेजा-कम्मइयदव्वेण च गुणिय रूवे अवणिदे उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणा होदि । पुणो इममुक्कस्सपत्तेयसरीरवग्गणाए रूवाहियाए अवहिरिदे सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति पुव्वभणिदगुणगारो चेव होदि त्ति घेत्तव्वं । एसा अट्ठारसमो वग्गणा १८ एयंतवाइदिट्ठिस्स व्व✡ सव्वकालं सुण्णभावेणवट्ठिदा ।

**धुवसुण्णदव्ववग्गणाणमुवरि बादरणिगोददव्ववग्गणा णाम ।९३।**

उक्कस्सधुवसुण्णदव्ववग्गणाए एगरूवे पक्खित्ते सव्वजहण्णिया बादरणिगोददव्ववग्गणा होदि । सा कत्थ दिस्सदि ? खीणकसायचरिमसमए । किंविहे खीणकसाए होदि त्ति वुत्ते वुच्चदे- जो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण पुव्वकोडाउएसु मणुस्सेसु उववण्णो । तदो गब्भादिअट्ठवस्साणमंतोमुहुत्तब्भहियाणमुवरि सम्मत्तं संजमं च जुगवं घेत्तूण पुणो कम्मस्स उक्कस्सगुणसेडिणिज्जरं देसूणपुव्वकोडिं कादूण अंतोमुहुत्तावसेसे सिज्झदव्वए त्ति खवगसेढिमारूढो । तदो खवगसेडिम्मि सव्वुक्कस्स-

---

वह जघन्य वर्गणासे अनन्तगुणी है । गुणकार क्या है ? सब जीवोंका असख्यातवां भागप्रमाण गुणकार है । यथा- सब जीवराशिको असंख्यात लोकप्रमाण शरीरोंसे भाजित कर पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे, असंख्यात लोकोंसे और एक जीवके औदारिक, तैजस व कार्मणशरीरके द्रव्यसे गुणित कर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करने पर उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणा होती है । पुनः इसे एक अधिक उत्कृष्ट प्रत्येकशरीर द्रव्यवर्गणासे भाजित करने पर सब जीवराशिका असंख्यातवां भाग आता है । इसलिए पहले कहा गया गुणकार ही होता है ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिए । यह अठारवीं वर्गणा है १८ । एकान्तवादी दृष्टिके समान यह सदा काल शून्यरूपसे अवस्थित है ।

**ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणाओंके ऊपर बादरनिगोद द्रव्यवर्गणा है ॥ ९३ ॥**

उत्कृष्ट ध्रुवशून्य द्रव्यवर्गणामें एक अंकके मिलाने पर सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा होती है ।

शंका-- वह कहां दिखाई देती है ?

समाधान-- क्षीणकषायके अन्तिम समयमें ।

किस प्रकारके क्षीणकषायमें होती है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं- जो जीव क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । अनन्तर गर्भसे लेकर आठ वर्ष और अन्तर्मुहूर्तका होने पर सम्यक्त्व और संयमको युगपत् ग्रहण करके पुनः कुछ कम पूर्वकोटि काल तक कर्मकी उत्कृष्ट गुणश्रेणि निर्जरा करके सिद्ध होनेके लिए अन्तर्मुहूर्त काल अवशेष रहने पर क्षपकश्रेणि पर आरोहण किया । अनन्तर क्षपकश्रेणिमें सबसे उत्कृष्ट विशुद्धिके

---

✡ अ० का० प्रत्योः '-सेव्व' इति पाठः ]

**विसोहीए कम्मणिज्जरं करेमाणस्स खीणकसायस्स पढमसमए अणंता बादरणिगोदजीवा मरंति । बिदियसमए विसेसाहिया जीवा मरंति । केत्तियमेत्तेण विसेसाहिया? पढमसमए मदजीवपमाणमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडेदूण तत्थ एगखंडमेत्तेण । एवं तदियसमयादिसु विसेसाहिया विसेसाहिया मरंति जाव खीणकसायद्धाए पढमसमयप्पहुडि आवलियपुधत्तं गदं त्ति । तेण परं संखेज्जदिभागब्भहिया संखेज्जदिभागब्भहिया मरंति जाव खीणकसायद्धाए आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति । तदो उवरिमाणंतरसमए असंखेज्जगुणा मरंति । एवमसंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । गुणगारो पुण सव्वत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । विसेसाहियमरणचरिमसमए मदजीवे तप्पाओग्गेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गुणसेडिमरणपढमसमए मदजीवपमाणं होदि त्ति घेत्तव्वं । एवमुवरि पि जाणिदूण वत्तव्वं जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति । एसो गुणगारो समयं पडि मरंतजीवाणमेव परूवेदव्वो, ण पुलवियाणं । तं कधं णव्वदे? खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं त्ति उवरि भण्णमाणचूलियासुत्तादो । के णिगोदा णाम? पुलवियाओ णिगोदा त्ति भणंति ।**

---

द्वारा कर्मनिर्जरा करके क्षीणकषाय हुए इस जीवके प्रथम समयमें अनन्त बादर निगोद जीव मरते हैं । दूसरे समयमें विशेष अधिक जीव मरते हैं । कितने विशेष अधिक जीव मरते हैं? प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंके प्रमाणमें आवलीके असंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक जीव मरते हैं । इसी प्रकार तीसरे आदि समयोंमें विशेष अधिक विशेष अधिक जीव मरते हैं । यह क्रम क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर आवलिपृथक्त्व काल तक चालू रहता है । इसके आगे संख्यातवां भाग अधिक संख्यातवां भाग अधिक मरते हैं । और यह क्रम क्षीणकषायके कालमें आवलिका असंख्यातवां भाग काल शेष रहने तक चालू रहता है । इसके आगेके लगे हुए समयमें असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । इस प्रकार क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणे जीव मरते हैं । गुणकार सर्वत्र पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण है । विशेषाधिक मरनेके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीवोंके प्रमाणको तत्प्रायोग्य पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर गुणश्रेणि क्रमसे मरनेके प्रथम समयमें मरे हुए जीवोंका प्रमाण होता है ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए । इसी प्रकार आगे भी क्षीणकषायके अन्तिम समय तक जानकर कथन करना चाहिए । यह गुणकार प्रत्येक समयमें मरनेवाले जीवोंका ही कहना चाहिए, पुलवी जीवोंका नहीं ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान-- आगे कहे जानेवाले चूलिकाके ' खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तणिगोदाणं ' इस सूत्रसे जाना जाता है ।

शंका-- निगोद किन्हें कहते हैं?

समाधान-- पुलवियोंको निगोद कहते हैं ।

संपहि पुलवियाणं एत्थ सरूवपरूवणं कस्सामो। तं जहा खंधो अंडरं आवासो पुलविया णिगोदसरीरमिदि पंच होंति। तत्थ बादरणिगोदाणमासयभूदो❀ बहुएहि वक्खारएहि सहियो वलंजंतवाणियकच्छउडसमाणो मूलय-थूहल्लयादिववएसहरो खंधो णाम। ते च खंधा असंखेज्जलोगमेत्ता; बादरणिगोदपदिट्ठिदाणमसंखेज्जलोगमेत्तसंखुवलंभादो। तेसिं खंधाणं ववएसहरो तेसिं♠ भवाणमवयवा वलंजुअकच्छउडपुव्वावरभागसमाणा अंडरं णाम। अंडरस्स अंतोट्ठियो कच्छउडंडरंतोट्ठियवक्खारसमाणो आवासो णाम। अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि। एक्केक्कम्हि अंडरे असंखेज्जलोगमेत्ता आवासा होंति। आवासब्भंतरे संट्ठिदाओ कच्छउडंडरवक्खारंतोट्ठियपिसिवियाहि समाणाओ पुलवियाओ णाम। एक्केक्कम्हि आवासे ताओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ होंति। एक्केक्कम्हि एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि ओरालिय-तेजा-कम्मइयपोग्गलोवायाणकारणाणि कच्छउडंडरवक्खारपुलवियाए अंतोट्ठिददव्वसमाणाणि पुध पुध अणंताणंतेहि णिगोदजीवेहि आउण्णाणि होंति। तिलोग-भरह-जणवय-गाम-पुरसमाणाणि खंधंडरावासपुलविसरीराणि त्ति वा घेत्तव्वं।

पुणो एत्थ खीणकसायसरीरं खंधो णाम; असंखेज्जलोगमेत्तअंडराणमाधारभावादो। तत्थ अंडरंतोट्ठियअणंताणंतजीवेसु सुक्कज्झाणेण पडियसमयमसंखेज्जगुणाए

---

अब यहाँ पर पुलवियोंके स्वरूपका कथन करते हैं। यथा– स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवी और निगोदशरीर ये पाँच होते हैं। उनमेंसे जो बादर निगोदोंका आश्रयभूत है, बहुत वक्खारोंसे युक्त है तथा वलंजंतवाणिय कच्छउड समान है ऐसे मूली, थूअर और आर्द्रक आदि संज्ञाको धारण करनेवाला स्कन्ध कहलाता हैं। वे स्कन्ध असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं, क्योंकि, बादर निगोद प्रतिष्ठित जीव असंख्यात लोकप्रमाण पाये जाते हैं। जो उन स्कन्धोंके अवयव है और जो वलंजुअकच्छउडके पूर्वापर भागके समान हैं उन्हें अण्डर कहते है। जो अण्डरके भीतर स्थित हैं तथा कच्छउडअण्डरके भीतर स्थित वक्खारके समान हैं उन्हें आवास कहते हैं। अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। तथा एक एक अण्डरमें असंख्यात लोकप्रमाण आवास होते हैं। जो आवासके भीतर स्थित हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारके भीतर स्थित पिशवियोंके समान हैं उन्हें पुलवि कहते हैं। एक एक आवासमें वे असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। तथा एक एक आवासकी अलग अलग एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं जो कि औदारिक, तैजस और कार्मण पुद्गलोंके उपादान कारण होते हैं और जो कच्छउडअण्डरवक्खारपुलविके भीतर स्थित द्रव्योंके समान अलग अलग अनन्तानन्त निगोद जीवोंसे आपूर्ण होते हैं। अथवा तीन लोक, भरत, जनपद, ग्राम और पुरके समान स्कन्ध, अण्डर, आवास, पुलवि और शरीर होते हैं ऐसा यहाँ ग्रहण करना चाहिए।

पुनः यहाँ पर क्षीणकषाय जीवके शरीरकी स्कन्ध संज्ञा है; क्योंकि, वह असंख्यात लोकप्रमाण अण्डरोंका आधारभूत है। वहाँ अण्डरोंके भीतर स्थित हुए अनंतानंत जीवोंमेंसे शुक्ल-

---

❀ ता० प्रतौ '–मास ( म ) यभूदो' अ० आ० प्रत्योः '–मासमयभूदो', इति पाठः।
♠ ता० प्रतौ '–लोगमेत्तववएसहरा तेसिं' इति पाठः।

**सेडीए मदेसु खीणकसायचरिमसमए मरमाणजीवा अणंता होंति। होंता वि हेट्ठा दुचरिमसमएसु मदजीवेहिंतो असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो। खीणकसायचरिमसमयपुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ त्ति सुत्ते भणिदं। जदि पुव्वुत्तरगुणगारो पुलवियाणं होदि तो एदं ण घडदे; दुचरिमसमए मदजीवपुलवियासु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तासु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण गुणिदासु खीणकसायचरिमसमए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवीणमुवलंभादो। एक्केक्कम्हि खंधे अंडराणि असंखेज्जलोगमेत्ताणि। तत्थ एक्केक्कम्हि अंडरे आवासा असंखेज्जलोगमेत्ता। तत्थ एक्केक्कम्हि आवासे पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ त्ति पुव्वं परूविदं। तेण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ पुलवियाओ अत्थि त्ति ण घडदे। ण च तत्थतणपुलवियाणमसंखेज्जा भागा खीणकसायट्ठाणे णट्ठा त्ति वोत्तुं जुत्तं; सगसरीरट्ठियणिगोदजीवे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिय तत्थ एगखंडम्मि णट्ठे पुलवियाणमसंखेज्जाणं भागाणं विणासविरोहादो। ण च चरिमसमए मदजीवा दुचरिमादिसमएसु मदजीवाणमसंखेज्जदिभागो; गुणसेडिमरणपरूवणाए सह विरोहादो? एत्थ परिहारो वुच्चदे- खीणकसायसरीरे उक्कस्सेण जहण्णेण वि✡ पुलवियाओ आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव**

ध्यानके द्वारा प्रति समय असंख्यातगुणे श्रेणि रूपसे जीवोंके मरने पर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें मरनेवाले जीव अनन्त होते हैं। इतने होते हुए भी पहले द्विचरम समयमें मरनेवाले जीवोंसे असंख्यातगुणे होते हैं। गुणकार क्या है? पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है।

शंका-- क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण होती हैं ऐसा सूत्रमें कहा गया है। यदि पूर्वोक्त गुणकार पुलवियोंका होता है तो यह कथन घटित नहीं होता, क्योंकि, द्विचरम समयमें मृत जीवोंकी आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियोंको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ उपलब्ध होती हैं। एक एक स्कन्धमें अण्डर असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं। तथा एक एक अण्डरमें आवास असंख्यात लोकप्रमाण होते हैं और एक एक आवासमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र होती हैं इस प्रकार पहले कह आये हैं। इसलिए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ हैं यह वचन घटित नहीं होता है। वहाँकी पुलवियोंका असंख्यात बहुभाग क्षीणकषाय गुणस्थानमें नष्ट हो गया है यह कहना युक्त नहीं है। क्योंकि, अपने शरीरमें स्थित निगोद जीवोंको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित कर वहाँ लब्ध एक भागके नष्ट होनेपर पुलवियोंके असंख्यात बहुभागका विनाश माननेमें विरोध आता है। अन्तिम समयमें मरे हुए जीव द्विचरम आदि समयोंमें मरे हुए जीवोंके असंख्यातवें भागप्रमाण होते हैं यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, इस कथनका गुणश्रेणि क्रमसे मरण प्ररूपणाके साथ विरोध आता है।

समाधान-- यहाँ इस शंकाका समाधान करते हैं। क्षीणकषाय जीवके शरीरमें उत्कृष्ट

✡ ता० प्रतौ 'उक्कस्सेण जहण्णा (ण) वि' अ० प्रतौ 'उक्कस्साण जहण्णाण वि' आ० प्रतौ 'उक्कस्सेण जहण्णाणं वि' इति पाठः।

**होंति। एगबंधणबद्धाओ* असंखेज्जलोगमेत्ताओ कत्थ वि णत्थि। जहण्णाहियारादो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ होंति त्ति घेत्तव्वं। ण च पुव्वुत्तवयणेण सह विरोहो, खीणकसायं मोत्तूण अण्णखंधे अवलंबिय तत्थ परूविदत्तादो। ण च सव्वखंधेसु पुलवियाओ असंखेज्जलोगमेत्ताओ चेव अत्थि त्ति णियमो; णियमा य सुत्तवक्खाणस्सणुवलंभादो✡।**

**संपहि पुलवियाओ अस्सिदूण केहि वि आइरिएहि णिगोदाणं मरणक्कमो परूविदो, तं वत्तइस्सामो। तं जहा– खीणकसायपढमसमए मरंतपुलवियाओ थोवाओ। विदियसमए मरंतपुलवियाओ विसेसाहियाओ। तदियसमए विसेसाहियाओ। एवं विसेसाहिया विसेसाहिया जाव आवलिपुधत्तं त्ति। विसेसो पुण आवलियाए असंखेज्जदिभागपडिभागो। तेण परं संखेज्जभागब्भहियाओ जाव विसेसाहियमरणचरिमसमओ त्ति। तदो गुणसेडिमरणपढमसमए संखेज्जगुणाओ मरंति। एवं संखेज्जगुणाओ संखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायकालस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागो सेसो त्ति। तेण परमसंखेज्जगुणाओ असंखेज्जगुणाओ मरंति जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति। गुणगारेण पुण असंखेज्जगुणमरणम्हि सव्वत्थ आवलियाए असंखेज्जदिभागेण**

और जघन्य पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही होती हैं। एक बन्धनबद्ध पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र कहीं भी नहीं होतीं। यहाँ जघन्यका अधिकार होनेसे आवलिके असंख्यातवें भागमात्र ही पुलवियाँ होतीं हैं ऐसा ग्रहण करना चाहिए। पूर्वोक्त वचनके साथ विरोध आता है यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, क्षीणकषायको छोड़कर अन्य स्कन्धका अवलम्बन लेकर वहाँ कथन किया है। और सब स्कन्धोंमें पुलवियाँ असंख्यात लोकमात्र ही होती है ऐसा कोई नियम नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके नियमको करनेवाले सूत्रका व्याख्यान उपलब्ध नहीं होता।

अब पुलवियोंका अवलम्बन लेकर कितने ही आचार्य निगोद जीवोंके मरण क्रमका कथन करते है उसे बतलाते हैं। यथा–क्षीणकषायके प्रथम समयमें मरनेवाली पुलवियाँ स्तोक हैं। दूसरे समयमें मरनेवाली पुलवियाँ विशेष अधिक हैं। तीसरे समयमें विशेष अधिक हैं। इस प्रकार आवलि पृथक्त्व काल जाने तक विशेष अधिक विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण आवलिके असंख्यातवें भागका प्रतिभाग स्वरुप है। इससे आगे विशेषाधिकके क्रमसे मरण करनेके अन्तिम समय तक संख्यातवें भाग अधिक हैं। अनन्तर गुणश्रेणि रूपसे मरण करनेके प्रथम समयमें संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। इस प्रकार क्षीणकषायके कालमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण काल शेष रहने तक संख्यातगुणी संख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। इससे आगे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक असंख्यातगुणी असंख्यातगुणी मरणको प्राप्त होती हैं। जहाँ असंख्यातगुणी पुलवियोंका मरण कहा है वहाँ गुणकार आवलिका असंख्यातवां भाग

* ता०आ० प्रत्योः 'एत्थ बंधणबद्धाओ' इति पाठः। ✡ ता०प्रतौ 'णियमो, (णियमाय) सुत्तवक्खा (णा–) णामणुवलंभादो' अ०आ०प्रत्योः 'णियमो, णियमा य सुत्तवक्खाणमणुवलंभादो' इति पाठः।

होदव्वं; अण्णहा खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाणमणुववत्तीदो। अणेण विहाणेण गंतूण खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ मदावसिट्ठाओ; हेट्ठा दुचरिमादिसमएसु णट्ठपुलवियाहिंतो असंखेज्जगुणाओ उव्वरंति; गुणसेडिमरणण्णहाणुववत्तीदो। एसो पुलवियाणमावलियाए असंखेज्जदिभागो गुणगारो जो पढिदो✲ सो ण घडदे; खीणकसायचरिमसमए णट्ठपुलवियाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणत्तप्पसंगादो। कुदो? जहण्णपरित्तासंखेज्जं विरलिय आवलियाए असंखेज्जदिभागं रूवं पडि दादूण अण्णोण्णेण गुणिदे वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागपमाणुप्पत्तीदो।

किमट्ठमेदे एत्थ मरंति? ज्झाणेण णिगोदजीवुप्पत्तिट्ठिदिकारणणिरोहादो। ज्झाणेण अणंताणंतजीवरासिणिहंताणं कथं णिव्वुई✲? अप्पमादादो। को अप्पमादो? पंच महव्वयाणि पंच समदीयो तिण्णि गुत्तीओ णिस्सेसकसायाभावो च अप्पमादो णाम। हिंसा णाम पाण-पाणिवियोगो। तं करेंताणं कथमहिंसालक्खणपंचमहव्वय—

---

होना चाहिए, अन्यथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ उपलब्ध नहीं होतीं। इस विधिसे जाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागमात्र पुलवियाँ मरनेसे अवशिष्ट रहती हैं वे पीछे द्विचरम आदि समयोंमें नष्ट हुई पुलवियोंसे असंख्यातगुणी शेष रहती हैं। अन्यथा गुणश्रेणि मरण नहीं बन सकता। किन्तु यहाँ यह जो पुलवियोंका आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार कहा है वह घटित नहीं होता, क्योंकि, इस कथनसे क्षीणकषायके अन्तिम समयमें नष्ट हुई पुलवियाँ पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण प्राप्त होती हैं। कारण कि जघन्य परीतासंख्यातका विरलन कर और आवलिके असंख्यातवें भागको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देकर परस्पर गुणा करने पर भी पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाणकी उत्पत्ति होती है।

शंका—ये निगोद जीव यहाँ क्यों मरणको प्राप्त होते हैं?

समाधान—क्योंकि, ध्यानसे निगोद जीवोंकी उत्पत्ति और उनकी स्थितिके कारणका निरोध हो जाता है।

शंका—ध्यानके द्वारा अनन्तानन्त जीवराशिका हनन करनेवाले जीवोंको निवृत्ति कैसे मिल सकती है?

समाधान—अप्रमाद होनेसे।

शंका—अप्रमाद किसे कहते हैं?

समाधान—पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति और समस्त कषायोंके अभावका नाम अप्रमाद है।

शंका— प्राण और प्राणियोंके वियोगका नाम हिंसा है। उसे करनेवाले जीवोंके अहिंसा लक्षण पाँच महाव्रत कैसे हो सकते हैं?

---

✲ प्रतिषु पदिदो इति पाठः। ✲ अ-आ प्रत्योः 'णिव्वुत्ती' इति पाठः।

**संभवो ? ण, बहिरंगहिंसाए आसवत्ताभावादो । तं कुदो णव्वदे ? तदभावे वि अंतरंगहिंसादो चेव सित्थमच्छस्स बंधुवलंभादो । जेण विणा जं ण होदि चेव तं तस्स कारणं । तम्हा अंतरंगहिंसा चेव सुद्धणएण हिंसा ण बहिरंगा त्ति सिद्धं । ण च अंतरंगहिंसा एत्थ अत्थि; कसायसंजमाणमभावादो । उत्तं च---**

जियदु मरदु व जीवो अयदाचारस्स णिच्छओ बंधो ।
पयदस्स णत्थि बंधो हिंसामेत्तेण समिदीहि ॥ २ ॥
सरवासे दु पदंते जह दढकवचो ण भिज्जहि सरेहिं ।
तह समिदीहि ण लिप्पइ साहू काएसु इरियंतो✡ ॥ ३ ॥
जत्थेव चरइ बालो परिहारण्हू वि चरइ तत्थेव ।
वज्झइ सो पुण बालो परिहारण्हू वि मुंचइ सो✽ ॥ ४ ॥
स्वयं ह्यहिंसा स्वयमेव हिंसनं न तत्पराधीनमिह द्वयं भवेत् ।
प्रमादहीनोऽत्र भवत्यहिंसकः प्रमादयुक्तस्तु सदैव हिंसकः ॥ ५ ॥
वियोजयति चासुभिर्न च वधेन संयुज्यते शिव च न परोपमर्दपरुषस्मृतेर्विद्यते ।
वधोपनयमभ्युपैति च परानन्निघ्नन्नपि त्वयायमतिदुर्गमः प्रशमहेतुरुद्योतितः ॥६॥

---

समाधान-- नहीं; क्योंकि, बहिरंग हिंसा आस्रवरूप नहीं होती ।

शंका-- यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान-- क्योंकि, बहिरंग हिंसाका अभाव होनेपर भी केवल अन्तरङ्ग हिंसासे सिक्थ मत्स्यके बन्धकी उपलब्धि होती है ।

जिसके बिना जो नहीं होता है वह उसका कारण है, इसलिए शुद्धनयसे अन्तरंग हिंसा ही हिंसा है, बहिरंग नहीं; यह बात सिद्ध होती है । यहाँ अन्तरंग हिंसा नहीं है; क्योंकि, कषाय और असंयमका अभाव है । कहा भी है---

चाहे जीव जिओ चाहे मरो, अयत्नाचारपूर्वक प्रवृत्ति करनेवाले जीवके नियमसे बन्ध होता है, किन्तु जो जीव समितिपूर्वक प्रवृत्ति करता है उसके हिंसा हो जाने मात्रसे बन्ध नहीं होता ॥ २ ॥

सरोंकी वर्षा होने पर जिस प्रकार दृढ कवचवाला व्यक्ति सरोंसे नही भिदता है उसी प्रकार षट्कायिक जीवोंके मध्यमें समितिपूर्वक गमन करनेवाला साधु पापसे लिप्त नहीं होता है ॥ ३ ॥

जहाँ पर अज्ञानी भ्रमण करता है वहीं पर हिंसाके परिहारकी विधिको जाननेवाला भी भ्रमण करता है, परन्तु वह अज्ञानी पापसे बँधता है और परिहार विधिका जानकर उससे मुक्त होता है ॥ ४ ॥

अहिंसा स्वयं होती है और हिंसा भी स्वयं ही होती है । यहाँ ये दोनों पराधीन नहीं हैं । जो प्रमादहीन है वह अहिंसक है किन्तु जो प्रमादयुक्त है वह सदैव हिंसक है ॥ ५ ॥

कोई प्राणी दूसरेको प्राणोंसे वियुक्त करता है फिर भी वह बंधसे संयुक्त नहीं होता ।

---

✡ मूलाचा० ५, १३१ ।　　✽ मूलाचा० ५, १३२ ।

संपहि खीणकसायपढमसमयप्पहुडि ताव बादरणिगोदजीवा उप्पज्जंति जाव तेसिं चेव जहण्णाउवक्कालो सेसो त्ति। तेण परं ण उप्पज्जंति । कुदो ? उप्पण्णाणं जीवणीयकालाभावादो✡। तेण कारणेण बादरणिगोदजीवा एत्तो प्पहुडि जाव खीणकसायचरिमसमओ त्ति ताव सुद्धा✿ मरंति चेव ।

संपहि खीणकसायचरिमसमए आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियासु❀ पुध पुध असंखेज्जलोगमेत्तणिगोदसरीरेहि आउण्णासु ट्ठिदअणंताणंतजीवाणं अणंताणंतविस्सासुवचयसहियकम्म-णोकम्मसंघाओ♠ सव्वजहण्णिया बादरणिगोददव्ववग्गणा होदि ।

संपहि एदिस्से बादरणिगोददव्ववग्गणाए ट्ठाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा— एत्थ ताव अणंताणंतजीवाणं ओरालियसरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह पुध ट्ठविय पुणो तेसिं चेव सव्वेसिं♥ जीवाणं सविस्सासुवचय-तेजासरीरपरमाणुपुंजं विस्सासुवचएहि सह कम्मइयसरीरपरमाणुपुंजं च पुध ट्ठविय☮ एदेसिं छण्णं पुंजाणमुवरि परमाणू वड्ढाविय ट्ठाणुप्पत्ती वुच्चदे---

---

तथा परोपघातसे जिसकी स्मृति कठोर हो गई है, अर्थात् जो परोपघातका विचार करता है उसका कल्याण नहीं होता। तथा कोई दूसरे जीवोंको नहीं मारता हुआ भी हिंसकपनेको प्राप्त होता है। इस प्रकार हे जिन ! तुमने यह अतिगहन प्रशमका हेतु प्रकाशित किया है, अर्थात् शान्तिका मार्ग बतलाया है ।। ६ ।।

क्षीणकषायके प्रथम समयसे लेकर बादर निगोद जीव तब तक उत्पन्न होते हैं जब तक क्षीणकषायके कालमें उनका जघन्य आयुका काल शेष रहता है। इसके बाद नहीं उत्पन्न होते; क्योंकि, उत्पन्न होने पर उनके जीवित रहनेका काल नहीं रहता, इसलिए बादर निगोद जीव यहांसे क्षीणकषायके अन्तिम समय तक केवल मरते ही हैं।

यहां क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण पुलवियां हैं जो कि पृथक् पृथक् असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीरोंसे आपूर्ण हैं उनमें स्थित अनन्तानन्त निगोद जीवोंके जो अनन्तानन्त विस्रसोपचयसे युक्त कर्म और नोकर्म संघात है वह सबसे जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणा है।

अब इस बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके स्थानोंका कथन करते हैं। यथा— यहां अनन्तानन्त जीवोंके अपने विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणुपुंजको पृथक् स्थापित करके पुनः उन्हीं सब जीवोंके अपने विस्रसोपचय सहित तैजसशरीर परमाणु- पुञ्जको और अपने विस्रसोपचय सहित कार्मणशरीर परमाणुपुञ्जको पृथक् स्थापित कर इन छह पुञ्जोंके ऊपर परमाणुओंकी वृद्धि कर स्थानोंकी उत्पत्तिका कथन करते है--

---

✡ ता० प्रतौ 'जीवणियमकालाभावादो' इति पाठः। ✿ प्रतिषु 'सुध्दा' इति पाठः।
❀ ता० प्रतौ 'असंखे०भागमेत्ता पुलवियासु' इति पाठः। ♠ अ० का० प्रत्योः '-सहिदा कम्मणोकम्मसंघाओ' इति पाठः। ♥ प्रतिषु 'सव्वेहि' इति पाठः। ☮ ता० प्रतौ 'ट्ठाविय' इति पाठः।

**अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण एगविस्ससुवचएण ओरालियसरीरपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो। एदमण्णमपुणरुत्तट्ठाण होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणादो एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो। पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण खीणकसायचरिमसमए बोहि विस्ससुवचयपरमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊणच्छिदो तदो तमण्णं तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो तीहि विस्ससुवचय परमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। पुणो चदुहि विस्ससुवचएहि परमाणूहि ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजमब्भहियं काऊण अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयम्हि ट्ठिदो ताधे पंचममपुणरुत्तट्ठाणमुप्पज्जदि। एवमेगेगपरमाणुत्तरकमेण ताव ट्ठाणाणि उप्पादेदव्वाणि जाव खीणकसायचरिमसमयम्हि सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्ससुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति।**

**पुणो अण्णो जीवो खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण जहण्णदव्वस्सुवरि एगोरालियपरमाणुमोरालियसरीरपुंजम्हि❀ वड्ढाविय पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजं वड्ढाविय✿ खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुण-**

---

एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर एक विस्रसोपचय परमाणुसे औदारिकशरीरके पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तो इसके यह अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि, अनन्तर पूर्वके स्थानसे यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है। पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें दो विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके स्थित है तब उसके यह अन्य तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः एक अन्य जीव तीन विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब चौथा अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। पुनः चार विस्रसोपचय परमाणुओंसे औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके जो अन्य जीव क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब पाँचवां अपुनरुक्त स्थान उत्पन्न होता है। इस प्रकार उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढाते हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सब जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक स्थान उत्पन्न करने चाहिए।

पुनः एक अन्य जीव लो जो क्षपित कर्मांशिक विधिसे आकर जघन्य द्रव्यके ऊपर औदारिकशरीर पुञ्जमें एक औदारिकशरीर परमाणुको बढाकर पुनः औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुप्रमाण विस्रसोपचयपुञ्जको बढाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है; क्योंकि, जीवोंसे अनन्तगुणे औदारिकशरीर

---

❀ ता० प्रतौ 'सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता। ओरालियविस्ससुवचयपरमाणुमोरालियसरीरपुंजम्हि' इति पाठः। ✿ क० प्रतौ 'पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजम्हि पुव्ववड्ढाविदो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजम्मि वड्ढाविय' आ० का० प्रत्योः 'पुणो ओरालियसरीरविस्ससुवचयपरमाणुपमाणविस्ससुवचयपुंजम्मि पुव्वं वड्ढाविदो ओरालिय० वड्ढाविय' इति पाठः।

रुत्तट्ठाणं होदि । कुदो ? अणंतरहेट्ठिमट्ठाणोरालियविस्ससुवचयपुंजादो एदस्स ट्ठाणस्स ओरालियसरीरविस्ससुवचयपुंजो सरिसो होदूण एत्थतणओरालियसरीरपुंजस्स परमाणुत्तरत्तुवलंभादो ।

पुणो एदस्सुवरि एगोरालियविस्ससुवचयपरमाणुम्हि वड्ढिदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । दोसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु विस्ससुवचयपरमाणुसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगुत्तरवड्ढीए ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्ससुवचयपरमाणू वड्ढिदा त्ति । एवं वड्ढाविदूणच्छिदे तदो अण्णो जीवो ओघजहण्णदव्वं दोओरालियपरमाणूहि दोवारं वड्ढिदविस्ससुवचयेहि य अब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेदेण कमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियसरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेसिं विस्ससुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति । वड्ढंता वि केवडिया इदि पुच्छिदे एयबादरणिगोदजीवम्मि जत्तियविस्ससुवचयसहियओरालियसरीरपरमाणू अत्थि तत्तियमेत्ता ।

कधमेगो जीवो दोण्णं जीवाणं सविस्ससोरालियसरीरपुंजस्स आहारो होज्ज? ण, एक्कम्हि वि जीवे असंखेज्जाणं खविद✠कम्मंसियजीवाणमोरालियसरीरदव्वुवलंभादो ।

अनन्तर पूर्वके स्थानके औदारिक विस्रसोपचय पुञ्जके साथ इस स्थानका औदारिकशरीर विस्रसोपचय पुञ्ज समान होकर यहांके औदारिकशरीर पुञ्जमें एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है ।

पुनः इसके ऊपर एक औदारिक विस्रसोपचय परमाणुके बढने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । दो विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन विस्रसोपचय परमाणुओंके बढ़ने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणुको बढाते जाना चाहिए । इस प्रकार बढाकर स्थित होने पर अनन्तर एक अन्य जीव लो जो ओघ जघन्य द्रव्यको दो औदारिक परमाणुओंसे और दो बार बढाए हुए विस्रसोपचयोंसे अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार इस क्रमसे तब तक बढाते जाना चाहिए जब जाकर अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र औदारिकशरीर परमाणुओंकी और सब जीवोंसे अनन्तगुणे उन्हींके विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो जाती है । बढ़ाते हुए भी कितनी बार बढावे ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके जितने विस्रसोपचयके साथ औदारिकशरीर परमाणु हैं उतनी बार बढावे ।

शंका-एक जीव दो जीवोंके विस्रसोपचयसहित औदारिकशरीर पुञ्जका आधार कैसे हो सकता है ?

समाधान-नहीं, क्योंकि, एक ही जीवमें असंख्यात क्षपित कर्मांशिक जीवोंका औदारिकशरीर द्रव्य उपलब्ध होता है ।

✠ ता० प्रतौ 'जीवे असंखेज्जगुणं खविद-' इति पाठः ।

**जदि एक्कम्हि जीवे असंखेज्जाणं जीवाणं दव्वं संभवदि तो बादरणिगोदजहण्णवग्गणाए अणंतजीवाणं ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवओरालियसरीरदोपुंजा णिच्छएण संभवंति त्ति पुणो किण्ण घेप्पदे ? ण । पुणो अण्णो जीवो पुव्वं वड्ढिददव्वेण ओरालियसरीरमब्भहियं काऊण पुणो तेजइयसरीरविस्सासुवचयपुंजे एगपरमाणुणा वड्ढाविदे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि; अणंतरहेट्ठिमट्ठाणं पेक्खिय एत्थ परमाणुत्तरत्तुवलंभादो। पुणो पुव्विल्लट्ठाणम्हि बेतेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । तिसु तेजइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । एवमेगादिएगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता तेजइयसरीरविस्सासुवचयपरमाणुवड्ढि त्ति ।**

**तदो अण्णो जीवो ओरालियसरीरदोपुंजेसु एगजीवोरालियसरीरदोपुंजे वड्ढाविय तेजासरीरमेगतेजापरमाणुणा अब्भहियं काऊण एगतेजासरीरपरमाणुणा संबंध-पाओग्गअणंतपरमाणू पुव्वं व वड्ढाविदमेत्ते तेजइयविस्सासुवचएसु वड्ढाविय खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि । कारणं सुगमं । तदो अण्णो जीवो तेजासरीरमेगविस्सासुवचयपरमाणुणा अब्भहियं कादूणच्छिदो ताधे अण्णम-**

---

शंका-- यदि एक जीवमें असंख्यात जीवोंका द्रव्य सम्भव है तो बादर निगोद जघन्य वर्गणा सम्बन्धी अनन्त जीवोंके औदारिकशरीर सम्बन्धी दो पुञ्जोंमें एक जीव संबंधी औदारिकशरीरके दो पुञ्ज निश्चयसे सम्भव हैं ऐसा क्यों नहीं ग्रहण करते ?

समाधान-- नहीं ग्रहण करते ।

पुन: एक अन्य जीव लो जो पहले बढाए हुए द्रव्यके साथ औदारिकशरीरको अधिक करके पुन: तैजसशरीरके विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणुको बढाकर स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है, क्योंकि, अनन्तर पूर्वके स्थानको देखते हुए यहां एक परमाणु अधिक उपलब्ध होता है । पुन: पूर्वोक्त स्थानमें दो तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । तीन तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंके बढाने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । इस प्रकार एकसे लेकर उत्तरोत्तर एक एक परमाणु तब तक बढाना चाहिए जब जाकर सब जीवोंसे अनन्तगुणे तैजसशरीर विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि हो लेती है ।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो औदारिकशरीरके दो पुञ्जोंमें एक जीव सम्बन्धी औदारिकशरीरके दो पुञ्ज बढाकर, तैजसशरीरको एक तैजस परमाणुसे अधिक करके तथा एक तैजसशरीरके परमाणुसे सम्बन्ध रखने योग्य और पहलेके समान बढाये हुए अनन्त परमाणु-प्रमाण तैजसशरीर विस्रसोपचयोंको बढाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है । कारण सुगम है । अनन्तर एक अन्य जीव लो जो तैजसशरीरको एक विस्रसोपचय परमाणु अधिक करके स्थित है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है ।

**पुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो बेविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरकमेण ताव वड्ढावेदव्वं जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणा एगतेजइयपरमाणुसंबंधपाओग्गमेत्ता वड्ढिदा त्ति। तदो अण्णो जीवो बेहि तेजापरमाणूहि तेजासरीरमब्भहियं काऊण दोण्णितेजासरीरपरमाणुपाओग्गविस्सासुवचयेहि तेजासरीरविस्सासुवचयपुंजमब्भहियं काऊण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एदेण कमेण णेदव्वं जाव तेजासरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता तेजासरीरपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। वड्ढंता वि हु केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदस्स तेजइयसरीरम्मि जत्तिया परमाणू विस्सासुवचयसहिया अत्थि तत्तियमेत्ता।**

**पुणो अण्णो जीवो एवं वड्ढिदोरालियतेजासरीरो कम्मइयविस्सासुवचयपुंजम्मि एगपरमाणुमहियं काऊण चरिमसमयखीणकसाई जादो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। पुणो दोसु कम्मइयविस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवमेगुत्तरकमेण सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणू वड्ढावेदव्वा। एवं जाणिऊण णेयव्वं जाव कम्मइयसरीरपुंजम्मि अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता**

---

पुनः दो विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंको वृद्धि होने पर अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एक तैजसशरीर परमाणुसे सम्बन्ध योग्य सब जीवोंसे अनन्तगुणे परमाणुओंकी वृद्धि होने तक उत्तरोत्तर एक एक परमाणु बढाना चाहिए। अनन्तर एक अन्य जीव लो जो दो तैजस परमाणुओंसे तैजसशरीरको अधिक करके दो तैजसशरीर परमाणुओंके योग्य विस्रसोपचय परमाणुओंसे तैजसशरीर विस्रसोपचय पुञ्जको अधिक करके क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब उसके अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। इस क्रमसे तैजसशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र तैजसशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। वृद्धि होते हुए भी कितने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर देते हैं कि एक बादर निगोद जीवके तैजसशरीरमें विस्रसोपचयसहित जितने परमाणु होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

पुनः एक अन्य जीव लो जिसने इस प्रकार औदारिकशरीर और तैजसशरीरकी वृद्धि की है तथा जो कार्मणशरीर विस्रसोपचय पुञ्जमें एक परमाणु अधिक करके अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायी हुआ है उसके तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। पुनः दो कार्मण विस्रसोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार एकोत्तरके क्रमसे सब जीवोंसे अनन्तगुणे कार्मण विस्रसोपचय परमाणु बढाने चाहिए। इस प्रकार जानकर कार्मणशरीर पुञ्जमें अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागमात्र कार्मणशरीर परमाणुओंकी तथा सब जीवोंसे

**कम्मइयपरमाणू सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्ता विस्सासुवचयपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। होंता वि केत्तिया त्ति भणिदे एगजीवम्मि जत्तिया कम्मपरमाणू कम्मइयविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गला च अत्थि तत्तियमेत्ता।**

**तदो अण्णो जीवो पुव्वविहाणेण आगंतूण खीणकसायचरिमसमए जहण्णबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगजीवमहियं काऊणच्छिदो। संपहि एदं ट्ठाणं पुणरुत्तं होदि; पुव्विल्लअणंतरहेट्ठिमट्ठाणस्स ओरालिय-तेजा-कम्मइयाणं पुंजेहिंतो एत्थतण तेसिं छपुंजाणं सरिसत्तुवलंभादो। पुव्विल्लजीवेहिंतो संपहियवग्गणाए एगो जीवो अहियो त्ति ट्ठाणमिदमपुणरुत्तमिदि किण्ण वुच्चदे? ण; जीवस्स बंधणिज्जववएसाभावादो। पोग्गलो हि✱बंधणिज्जं णाम। ण च जीवो पोग्गलो; अमुत्तस्स मुत्तभावविरोहादो।**

**पुणो अण्णो जीवो संपहियबादरणिगोदवग्गणाए उवरि एगमोरालियसरीरविस्सासुवचयपरमाणुं वड्ढाविय✲ खीणकसायचरिमसमए अच्छिदो ताधे अण्णमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। बिदियपरमाणुम्हि वड्ढिदे बिदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। तिसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु तदियमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। चदुसु विस्सासुवचयपरमाणुपोग्गलेसु वड्ढिदेसु चउत्थमपुणरुत्तट्ठाणं होदि। एवं णेयव्वं जाव सव्वजीवेहि**

---

अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणुओंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए। वृद्धिको प्राप्त होते हुए कितने वृद्धिको प्राप्त होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक जीवमें जितने कर्मपरमाणु और कार्मणशरीर विस्रसोपचय परमाणु पुद्गल होते हैं उतने परमाणु वृद्धिको प्राप्त होते हैं।

अनन्तर एक अन्य जीव लो जो पूर्व विधिसे आकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक जीवको अधिक करके स्थित है। तब यह स्थान पुनरुक्त है, क्योंकि, पहलेके अनन्तर पिछले स्थानके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके पुञ्जसे यहांके उनके छह पुञ्ज सदृश उपलब्ध होते हैं।

शंका-- पहलेके जीवोंसे सांप्रतिक वर्गणा सम्बन्धी एक जीव अधिक है इसलिए इस स्थानको अपुनरुक्त क्यों नहीं कहते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, जीवकी बंधनीय संज्ञा नहीं है। पुद्गलोंकी ही बंधनीय संज्ञा है। परंतु जीव पुद्गल नहीं हो सकता, क्योंकि, अमूर्तको मूर्तरूप होनेमें विरोध आता है।

पुन: एक अन्य जीव लो जो साम्प्रतिक बादर निगोद वर्गणाके ऊपर एक औदारिकशरीर विस्रसोपचय परमाणुको बढाकर क्षीणकषायके अन्तिम समयमें स्थित है तब अन्य अपुनरुक्त स्थान होता है। दूसरे परमाणुकी वृद्धि होने पर दूसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। तीन विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर तीसरा अपुनरुक्त स्थान होता है। चार विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने पर चौथा अपुनरुक्त स्थान होता है। इस प्रकार सब

---

✱ अ०आ०का० प्रतिषु 'पोग्गले हि' इति पाठः।

✲ अ० आ० प्रत्यो: 'परमाणुं हि वड्ढाविय' का० प्रतौ 'परमाणुम्हिवड्ढाविय' इति पाठः।

अणंतगुणमेत्ता ओरालियविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गला वड्डिदा त्ति । होंता वि ते केत्ति-यमेत्ता त्ति वुत्ते एगोरालियपरमाणुविस्सासुवचयमेत्ता । एवं वड्डिदूण ट्ठिदट्ठाणादो एग-ओरालियपरमाणुस्स विस्सासुवचयं वड्डिदूण ट्ठिदचरिमसमयखीणकसायट्ठाणमपुणरुत्त-ट्ठाणं होदि। कारणं सुगमं । एवमणेण विहाणेण ओरालियसरीरवेपुंजा ताव वड्ढावे-दव्वा जाव सव्वजीवेहि अणंतगुणमेत्तविस्सासुवचयपरमाणू अभवसिद्धिएहि अणंतगुणा सिद्धाणमणंतभागमेत्ता ओरालियपरमाणू च वड्ढिदा त्ति। होंता वि ते केत्तिया त्ति भणिदे एगबादरणिगोदजीवस्स ओरालियसरीरम्हि जत्तिया ओरालियपरमाणू तेसिं विस्सासुवचयपरमाणू च अत्थि तत्तियमेत्ता । एवं तेजासरीरपुंजो कम्मइयसरीरपुंजो च सविस्सासुवचओ परिवाडीए✱ वड्ढावेदव्वो जावेगबादरणिगोदजीवेण संचिदतेजा-कम्मइयसरीराणं चदुपुंजपमाणं पत्तं त्ति । एवं वड्डिदूण ट्ठिदो च पुणो अण्णो जीवो खीणकसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोदवग्गणं बेहि बादरणिगोदजीवेहि अब्भहियं कादूण खीणकसायचरिमसमए ट्ठिदो च सरिसो; पुव्विल्ल✱ट्ठाणम्मि कमेण वड्डिदूण ट्ठिददव्वस्स एत्थतणदोजीवेसु उवलंभादो ।

पुव्विल्लजीवं मोत्तूण इमं घेत्तूण एदस्सुवरि पुव्वं व अण्णेगो जीवो वड्ढावेदव्वो ।

---

विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंकी वृद्धि होने तक ले जाना चाहिए । होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक औदारिकशरीर परमाणुके विस्रसोपचयमात्र होते हैं । इस प्रकार बढाकर स्थित हुए स्थानसे एक औदारिक परमाणुके विस्रसोपचयको बढाकर स्थित हुआ अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय स्थान अपुनरुक्त स्थान होता है । कारण सुगम है । इस प्रकार इस विधिसे औदारिकशरीरके दो पुञ्ज तब तक बढाने चाहिए जब तक सब जीवोंसे अनन्तगुणे विस्रसोपचय परमाणु तथा अभव्योंसे अनन्तगुणे और सिद्धोंके अनन्तवें भागप्रमाण औदारिकशरीर सम्बन्धी परमाणु वृद्धिको नहीं प्राप्त हो जाते । ऐसा होते हुए भी वे कितने होते हैं ऐसा प्रश्न करने पर कहते हैं कि एक बादर निगोद जीवके औदारिकशरीरमें जितने औदारिक-शरीरके परमाणु और उसके विस्रसोपचय परमाणू होते हैं तन्मात्र होते हैं । इसी प्रकार एक बादर निगोद जीवके द्वारा सचित हुए तैजसशरीर और कार्मणशरीरके चार पुञ्जप्रमाण द्रव्यके प्राप्त होने तक अपने अपने विस्रसोपचयके साथ तैजसशरीर पुञ्जको और कार्मणशरीर पुञ्जको आनुपूर्वी क्रमसे बढाना चाहिए । इस प्रकार बढाकर स्थित हुआ जीव तथा क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद वर्गणाके दो बादर निगोद जीवोंसे अधिक करके क्षीणक-षायके अन्तिम समयमें स्थित हुआ अन्य जीव समान है, क्योंकि, पूर्वोक्त स्थानमें क्रमसे बढाकर स्थित हुआ द्रव्य यहाँके दो जीवोंमें उपलब्ध होता है ।

पहलेके जीवको छोडकर तथा इसे ग्रहण कर इसके ऊपर पहलेके समान एक अन्य जीव बढाना चाहिए । इस प्रकार स्थान और शास्त्रके अविरोधसे उत्तरोत्तर एक एक जीवको बढाते

---

✱ ता० प्रतौ ' च विस्सासुवचओ परिवाडीए ' आ० प्रतौ ' विस्सासुवचयउवरि वादीए ' इति पाठः ।

✱ ता० प्रतौ ' ट्ठिदो चरिमसा ( च सरिसो ), पुव्विल्ल– ' अ० प्रतौ ' ट्ठिदो चरिमसाहि पुव्विल्ल- ' अ० का० प्रत्योः ' ट्ठिदो चरिम० पुव्विल्ल– ' इति पाठः ।

एवमेगेगुत्तरकमेण ट्ठाणसमयाविरोहेण अणंताणंतकम्म-णोकम्मपरमाणुपोग्गलेहि जडिदसव्वजीवपदेसा✡ जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता वड्ढावेदव्वा । एवं वड्ढाविय पुणो एत्थतणअणंतजीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं छ पुंजा कमेण वड्ढावेदव्वा जावप्पणो सव्वुक्कस्सपमाणं पत्ता त्ति । एदिस्से चरिमसमयखीणकसायस्स उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणाए को सामी ? जीवो गुणिदकम्मंसियो सव्वुक्कस्ससरीरोगाहणाए वट्टमाणो चरिमसमयखीणकसाओ सामी । एत्थ उक्कस्सवग्गणाए वि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ चेव पुलवियाओ । असंखेज्जलोगमेत्ताओ णत्थि । कुदो ? साभावियादो । कत्थ पुण♠ असंखेज्जलोगमेत्तपुलवियाओ ? मूलय-महामच्छथूहल्लयादिसु । एक्केक्कपुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि✲ णिगोदसरीराणि एक्केक्कणिगोदसरीरे अणंताणंता णिगोदजीवा अत्थि । पुणो तेसु जीवेसु आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव गुणिदकम्मंसिया । अवसेसा पुण सव्वे गुणिदघोलमाणा चेव । एवं वड्ढिदूणच्छिद❋खीणकसायचरिमसमए वड्ढी णत्थि । कुदो ? तत्थतणजीवाणं तेसिमोरालिय-तेजा-कम्मइयसरीराणं च सव्वुक्कस्सभावुवलंभादो ।

एसा खीणकसायस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स उक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा खीण-

हुए अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म परमाणु पुद्गलोंसे व्याप्त सब जीव प्रदेश हैं जिनके ऐसे पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव बढाने चाहिए । इस प्रकार बढाकर पुनः यहांके अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीरोंके क्रमसे छह पुञ्च अपने सर्वोत्कृष्ट प्रमाणको प्राप्त होने तक बढाने चाहिए ।

शंका-अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीवके यह जो उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा होती है इसका स्वामी कौन जीव है ?

समाधान-जो गुणित कर्मांशिक है और सबसे उत्कृष्ट शरीर अवगाहनासे युक्त है ऐसा अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषाय जीव उक्त उत्कृष्ट वर्गणाका स्वामी है ।

यहाँ पर उत्कृष्ट वर्गणाकी पुलवियाँ आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होती हैं, असंख्यात लोकप्रमाण नहीं होती; क्योंकि, ऐसा स्वभाव है ।

शंका-असंख्यात लोकप्रमाण पुलवियाँ कहाँ पर होती हैं ?

समाधान-मूली, महामत्स्य, थूहर और लतादिकायें होती हैं ।

एक एक पुलवीमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोदशरीर होते हैं और एक एक निगोद शरीरमें अनन्तानन्त निगोद जीव होते हैं । परन्तु उन जीवोंमें आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव गुणितकर्मांशिक होते हैं तथा बाकीके सब जीव गुणितघोलमान होते हैं ।

इस प्रकार बढाकर स्थित हुए क्षीणकषायके अन्तिम समयमें और वृद्धि नहीं होती; क्योंकि, वहाँ स्थित हुए जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मणशरीर सर्वोत्कृष्ट भावको प्राप्त हो गये हैं ।

यह अन्तिम समयवर्ती क्षीणकषायके उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणा क्षीणकषायके साथ

✡ ता० प्रतौ ' जणिदसव्वजीवपदेसा ' इति पाठः । ♠ अ० आ० का० प्रतिषु ' कथं पुण ' इति पाठः । ✲ ता० प्रतौ ' एक्केक्कपुलवियासु संखेज्जलोगमेत्ताणि ' इति पाठः ।
❋ ता० का० प्रत्योः ' वड्ढिदूण ट्ठिद- ' इति पाठः ।

कसाएण सह घेत्तव्वा; एगबंधणबद्धत्तादो। खीणकसाओ अणिगोदो कधं बादरणिगोदो होदि ? ण, पाधण्णपदेण तस्स वि बादरणिगोदवग्गणाभावेण विरोहाभावादो। एदमेगं फद्दुयं होदि।

संपहि बिदियफद्दुयपरूवणं कस्सामो। तं जहा- अण्णो जीवो सव्वपयत्तेण खविदकम्मंसियलक्खणं काऊण सव्वजहण्णोरालियसरीरोगाहणाए खीणकसायदुचरिमसमए अच्छिदो। एवमच्छिदस्स आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपुलवियाओ एक्केक्किस्से पुलवियाए असंखेज्जलोगमेत्ताणि णिगोदसरीराणि होंति। एत्थ संपहि खविदकम्मंसियलक्खणेणागदजीवा आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव अत्थि। अवसेसा पुण सव्वे खविदघोलमाणा चेव। कुदो ? खविदकिरियाए एक्कम्हि समए सुट्ठु जदि जीवा बहुआ होंति तो आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ता चेव होंति त्ति णियमुवलंभादो। एदेसिमणंताणं जीवाणमोरालिय-तेजा-कम्मइयपरमाणुपोग्गले तेसिमणंताणंतविस्सासुवचयपरमाणुपोग्गले च घेत्तूण बिदियफद्दुयस्स आदी होदि। कुदो ? पढमफद्दुयं पेक्खिदूण अणंताणि ट्ठाणाणि अंतरिदूणुप्पण्णत्तादो।

एत्थ दोण्णं फद्दुयाणमंतरपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा- खीणकसायचरिमसमयसव्वजहण्णबादरणिगोदवग्गणजीवेहिंतो तस्सेव चरिमसमयउक्कस्सबादरणिगोदवग्गणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवेहि अब्भहिया। कुदो एदं णव्वदे?

---

ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि, वह एक बन्धनबद्ध है।

शंका- क्षीणकषाय जीव निगोदपर्यायरूप नहीं है, इसलिए वह बादर निगोद कैसे हो सकता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा उसे भी बादर निगोद वर्गणा होनेमें कोई विरोध नहीं आता।

यह एक स्पर्धक है।

अब दूसरे स्पर्धकका कथन करते हैं यथा---अन्य जीव सब प्रकारके प्रयत्नसे क्षपित कर्मांशिक विधिको करके सबसे जघन्य औदारिक शरीरकी अवगाहना द्वारा क्षीणकषायके द्विचरम समयमें स्थित हुआ। इस प्रकार स्थित हुए इस जीवके आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र पुलवियाँ होती हैं। एक एक पुलविमें असंख्यात लोकप्रमाण निगोद शरीर होते हैं। यहाँ क्षपित कर्मांशिक विधिसे आए हुए जीव आवलिके असंख्यातवें भाग मात्र ही होते हैं, बाकीके सब जीव क्षपित घोलमान ही होते हैं; क्योंकि, एक समयमें क्षपित क्रिया करनेवाले यदि बहुत जीव होते हैं तो आवलिके असंख्यातवें भागप्रमाण ही होते हैं, इस प्रकारका नियम पाया जाता है। इन अनन्त जीवोंके औदारिक, तैजस और कार्मण परमाणु पुद्गलोंको तथा उनके अनन्तानन्त विस्रसोपचय परमाणु पुद्गलोंको ग्रहण करके स्पर्धकका प्रारम्भ होता है; क्योंकि, प्रथम स्पर्धकको देखते हुए अनन्त स्थानोंके अन्तरालसे इसकी उत्पत्ति हुई है।

यहाँ दोनों स्पर्धकोंके अन्तरप्रमाणका कथन करते हैं यथा-क्षीणकषायके अन्तिम समयमें सबसे जघन्य बादर निगोद वर्गणाके जीवोंसे उसीके अन्तिम समयमें उत्कृष्ट बादर निगोद वर्गणाके जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण अधिक होते हैं।

अविरुद्धाइरियवयणादो । पुणो एदे जीवे अणंताणंतकम्म-णोकम्मपोग्गलेहि उवचिये अवणिय पुध ट्ठविदे अवणिदसेसो जहण्णबादरणिगोदवग्गणापमाणं होदि । पुणो खीणकसायचरिमसमयजहण्णबादरणिगोददव्वग्गणजीवेहिंतो तस्सेव दुचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवा विसेसाहिया। केत्तियमेत्तेण? खीणकसायचरिमसमयजहण्ण-बादरणिगोदवग्गणजीवेसु अणंताणंतेसु पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदेसु एयखंडमेत्तेण। तम्मि एगखंडे बिदियफद्दयादो अवणिदे उभयत्थ सेसजीवपमाणं सरिसं✡ होदि । संपहि चरिमसमए अवणिदजीवेहिंतो दुचरिमसमए अवणिदजीवा अणंतगुणा । कुदो ? चरिमवग्गणजीवाणमसंखेज्जदिभागे दुचरिमविसेसे सव्वजीवरासिस्स अणंतपढमवग्गमूलुवलंभादो । जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तजीवसहिदचरिमविसेसादो दुचरिमसमयत्थखीणकसायविसेसो अणंतगुणो तेण तत्थ विसेसे असंखेज्जलोगमेत्तसरीराणि । एक्केक्कम्हि सरीरे ट्ठिदअणंताणंतजीवा अत्थि। एदेसु चरिमविसेसजीवेसु अवणिदेसु जं सेसं तमणंताणि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि होदि । एत्तियमंतरिय उप्पण्णत्तादो बिदियं फद्दयं जादं । जदि अंतरं णत्थि तो एगं चेव❋ फद्दयं होज्ज; कमवड्ढिदंसणादो । एवं फद्दयंतरं जीवाणं चेव ण बादरणिगोदट्ठाणाणं; तेसिं

शंका—यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान—अविरुद्धभाषी आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

पुनः अनन्तानन्त कर्म और नोकर्म पुद्गलोंसे उपचित हुए इन जीवोंको अलग करके पृथक् स्थापित करनेपर अलग करनेसे जो शेष बचता है वह जघन्य बादर निगोद वर्गणाका प्रमाण होता है ।

पुनः क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादरनिगोद द्रव्यवर्गणाके जीवोंसे उसीके द्विचरम समयमें जघन्य बादर निगोद द्रव्यवर्गणाके जीव विशेष अधिक होते हैं । कितने विशेष अधिक होते हैं ? क्षीणकषायके अन्तिम समयमें जघन्य बादर निगोद वर्गणाके अनन्तानन्त-जीवोंमें पल्योपमके असंख्यातवें भागका भाग देनेपर जो एक भाग लब्ध आवे उतने विशेष अधिक होते हैं । इस एक भागको दूसरे स्पर्धकमेंसे घटा देनेपर उभयत्र शेष जीवोंका प्रमाण समान होता है । यहाँ चरम समयमें घटाए हुए जीवोंके द्विचरम समयमें घटाये हुए जीव अनन्तगुणे होते है; क्योंकि, चरम वर्गणाके जीवोंसे असंख्यातवें भागप्रमाण द्विचरम विशेषमें सब जीव-राशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल उपलब्ध होते हैं । यतः पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण जीवोंसे युक्त अन्तिम विशेषसे द्विचरमसमय सम्बन्धी क्षीणकषायका विशेष अनन्तगुणा होता है, इसलिए उस विशेषमें असंख्यात लोकमात्र शरीर होते हैं । तथा एक एक शरीरमें अनन्तानन्त जीव स्थित होते हैं । इनमेंसे चरमविशेष जीवोंके घटा देनेपर जो शेष रहता है वह सब जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूल प्रमाण होता है । इतने अन्तरसे उत्पन्न होनेके कारण द्वितीय स्पर्धक हुआ है । यदि अन्तर नहीं मानें तो एक ही स्पर्धक होवे, क्योंकि, क्रमवृद्धि देखी जाती है । यह स्पर्द्धकों का अन्तर जीवोंका ही होता है, बादर निगोद स्थानोंका नहीं, क्योंकि, जघन्य स्थानसे लेकर

✡ अ० आ० का० प्रतिषु 'पमाणसरिसं' इति पाठः । ❋ ता० अ० प्रत्योः 'एवं चेव' इति पाठः ।